अल्लाह की ने'मत : जन्नत

जन्नत अ़रबी ज़बान का एक लफ़्ज़ है, जिसका मा'नी (अर्थ) बाग़ होता है। ऐसा बाग़ जो अपनी हरियाली और घने पेड़ों की वजह से ज़मीन को छुपा ले। क़ुर्आन मजीद ने इस हसीन व जमील, पुरकशिश (आकर्षक), दिलफ़रेब (लुभावनी) और दीदाज़ेब (दर्शनीय) जन्नत के अनेक नाम ज़िक्र किये हैं। मषलन दारुस्सलाम, दारुल ख़ुल्द, दारुल मक़ाम, दारुल आख़िरह, मक़ामे अमीन, जन्नतुल मा'वा, जन्नातुन्नईम, जन्नतुल फ़िरदौस वग़ैरह। जन्नत क्या है? और किस चीज़ का नाम है इस दुनिया में उसका तस़व्वुर (कल्पना) करना और उसके अन्दरूनी माहौल का अंदाज़ा लगाना बेहद मुश्किल ही नहीं बल्कि नामुमकिन है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया,

'जन्नत में ऐसी-ऐसी ने'मतें हैं, जिन्हें किसी आँख ने देखा नहीं, न किसी कान ने उनकी ता'रीफ़ सुनी है। न ही उनका (सटीक) तस़व्वुर किसी आदमी के दिल में पैदा हुआ है।' (स़ह़ीह़ मुस्लिम : 2825)

क़ुर्आन करीम में जन्नत का ज़िक्र :

जन्नत एक ऐसी जगह है जिसके बारे में इन्सान सिर्फ़ क़यास (अनुमान) ही लगा सकता है। जन्नत के बारे में स़ह़ीह़ और सटीक जानकारी तो क़ुर्आन व ह़दीष़ से ही मिल सकती है। क़ुर्आने करीम में इर्शादे बारी तआ़ला है,

'अबदी जन्नतों में जन्नती लोग ख़ुद भी दाख़िल होंगे और उनके आबा व अज्दाद (पूर्वज), उनकी बीवियों और औलाद में से जो नेक होंगे वो भी उनके साथ जन्नत में जायेंगे। जन्नत के हर दरवाज़े से फ़रिश्ते अहले जन्नत के पास आयेंगे और कहेंगे सलामती हो तुम पर, ये जन्नत तुम्हारे स़ब्र का नतीजा है, आख़िरत का घर तुम्हें मुबारक हो।'

(सूरह रअ़द : 23-24)

'अहले जन्नत को जन्नत में किसी क़िस्म की थकान न होगी, न ही वो उस में से निकाले जायेंगे।' (सूरह हिज्र : 48)

जन्नत में ले जाने वाले अ़मल

01. अल्लाह तआ़ला का डर :

ह़ज़रत अबू हुरैरह (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) से ऐसे अ़मल के बारे में सवाल किया गया जो सबसे ज़्यादा लोगों को जन्नत में दाख़िल करेगा? तो आप (ﷺ) ने फ़र्माया, **'अल्लाह का डर और अच्छा अख़्लाक़।'**

(तिर्मिज़ी : 2004, सिलसिलुस्सह़ीहा : 977)

दिल में अल्लाह का डर होना जन्नत में दाख़िले की सबसे ज़रूरी शर्त़ है। अल्लाह से डरने वाला इन्सान बुरे अ़मल से बचने की कोशिश करेगा और ख़ुदा न ख़्वास्ता कोई गुनाह उससे सरज़द हो जाए तो वो नादिम (शर्मिन्दा) होते हुए अल्लाह के आगे तौबा करेगा। अच्छे अख़लाक़ का सबसे बेहतरीन नमूना अल्लाह के रसूल (ﷺ) की ह़याते-तय्यिबा (पवित्र जीवन) है। इसलिये यूँ कहा जा सकता है कि दिल में अल्लाह का डर रखते हुए और रसूलुल्लाह (ﷺ) की सीरत पर अ़मल करते हुए जो इन्सान अपने अख़लाक़ अच्छे बना लेगा वो जन्नत में दाख़िल होगा, इंशाअल्लाह!

02. तस्बीह़ व तह़मीद करना :

ह़ज़रत जाबिर (रज़ि.) बयान करते हैं, आप (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया, **'जिस शख़्स ने सुब्हानल्लाहिल अ़ज़ीम व बिह़म्दिही कहा उसके लिये जन्नत में एक खजूर का पेड़ लगा दिया जाता है।'** (तिर्मिज़ी : 3465)

अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया, **'दो कलिमे हैं जो ज़बान पर हल्के हैं और मीज़ान पर भारी हैं और रह़मान को प्यारे हैं। वे दो कलिमे हैं, सुब्हानल्लाहि व बि ह़म्दिही. सुब्हानल्लाहिल अ़ज़ीम।'**

(स़ह़ीह़ बुख़ारी, स़ह़ीह़ मुस्लिम)

क़यामत के दिन, ह़श्र के मैदान में, अल्लाह तआ़ला मीज़ान (तराज़ू) क़ायम करेगा जिसमें बन्दों के आ'माल तौले जाएंगे। जिनके नेक आ'माल, गुनाहों के मुक़ाबले में भारी होंगे उन्हें जन्नत में दाख़िल किया जाएगा। अल्लाह की तस्बीह व तह़्मीद बयान

मफ़हूम है कि जब फ़रिश्ते दुनिया का चक्कर लगाकर वापस आसमानों पर पहुँचते हैं तो अल्लाह तआ़ला उनसे पूछता है कि **तुमने मेरे बन्दों को किस हाल में पाया?** फ़रिश्ते कहते हैं कि **ऐ अल्लाह! वो तेरी ह़म्दो-ष़ना कर रहे थे और तुझसे जन्नत माँग रहे थे।** अल्लाह फ़र्माता है कि **क्या उन्होंने जन्नत देखी है?** फ़रिश्ते कहते हैं कि **ऐ अल्लाह! देखी तो नहीं है लेकिन अगर वो देख लें तो और ज़्यादा उसकी त़लब करें।** तो अल्लाह तआ़ला फ़र्माता है कि **ऐ फ़रिश्तों तुम गवाह रहना मैंने अपने बन्दों को बख़्श दिया और जो कुछ वो माँग रहे थे, उन्हें अ़त़ा कर दिया।**

37. सूरह मुल्क की तिलावत करना :

ह़ज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि नबी करीम (ﷺ) ने फ़र्माया, **'(क़ुर्आन मजीद में) तीस आयतों वाली एक सूरह है (या'नी सूरह मुल्क) जो अपने पढ़ने वाली की मग़्फ़िरत के लिये क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला के यहाँ झगड़ा करेगी यहाँ तक कि उसे जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा।'** (त़बरानी)

सूरह मुल्क की एक और फ़ज़ीलत यह भी है कि यह अ़ज़ाबे-क़ब्र से रूकावट बनती है। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द (रज़ि.) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) ने इर्शाद फ़र्माया, **'सूरह तबारकल्लज़ी बियदिहिल मुल्क अ़ज़ाबे क़ब्र से रूकावट है।'** (मुस्तदरक ह़ाकिम)

38. बेटियों की परवरिश करना :

ह़ज़रत अनस (रज़ि.) बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह (ﷺ) ने फ़र्माया, **'जिसने तीन लड़कियों की परवरिश की मैं और वो इन दोनों (अंगुलियों) की त़रह़ जन्नत में दाख़िल होंगे और आपने ये कहते हुए अपनी दोनों अंगुलियाँ साथ इशारा किया।'**

(तिर्मिज़ी : 1914, स़ह़ीहुल जामेउ़स्स़ग़ीर : 7146)

एक दूसरी ह़दीष़ में दो लड़कियों या बहनों का भी ज़िक्र है और रावी कहते हैं कि एक लड़की या बहन के बारे में भी अगर सवाल किया जाता तो अल्लाह के रसूल (ﷺ) यही बशारत देते।

39. माँ की ख़िदमत करना :

ह़ज़रत मुआ़विया बिन जाहिमा सलमी (रज़ि.) वो बयान करते हैं कि जाहिमा (रज़ि.) नबी करीम (ﷺ) की ख़िदमत में हाज़िर हुए तो आपने दरयाफ़्त फ़र्माया, **'क्या तुम्हारी माँ ज़िन्दा है?'** उन्होंने कहा, **'हाँ।'** आप (ﷺ) ने फ़र्माया, **'उसकी ख़िदमत किया करो क्योंकि उसके क़दमों तले जन्नत है।'** (निसाई : 3106)